मन्सा सेवा - 55

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **मन्सा सेवा के लिए स्वयं की स्थिति पावरपुल वनाओ, निरन्तर सेवाधारी बनो सदा अपने को बाप के स्नेही, सहयोगी और सदा सेवाधारी आत्मायें समझते हो?** जैसे स्नेह अटूट है ना। परमात्म-स्नेह को कोई भी शक्ति तोड़ सकती है? असम्भव है ना कि थोड़ा-थोड़ा सम्भव है? **यह अविनाशी स्नेह विनाश हो नहीं सकता। स्नेह के साथ-साथ सदा सहयोगी हैं।**

➳ _ ➳ किस बात में सहयोगी हैं? जो बाप के डायरेक्शन्स हैं उसमें सदा सहयोगी हैं। **सदा श्रीमत पर चलने में सहयोगी हैं और सदा सेवाधारी हैं। ऐसे नहीं कि सेवा का चांस मिला तो सेवाधारी। सदा सेवाधारी।**

ब्राह्मण बनना अर्थात् सेवा की स्टेज पर ही रहना। ब्राह्मणों का काम क्या है? सेवा करना।

➳ _ ➳ **वो नामधारी ब्राह्मण धामा खाने वाले और आप सेवा करने वाले।** तो हर सेकेण्ड सेवा की स्टेज पर हैं - ऐसे समझते हो? कि जब चांस मिलता है तब सेवा करते हो? चांस पर सेवा करने वाले हो वा सदा सेवाधारी हो? खाना बनाते भी सेवा करते हो? क्या सेवा करते हो?

➳ _ ➳ **याद में खाना बनाते हो तो यह सेवा करते हो। कोई भी कार्य करते हो तो याद में रहने से वायुमण्डल शुद्ध बनता है। क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनता है। तो याद की वृत्ति से वायुमण्डल बनाते हो।**
(18/11/1993)

➢ **परमात्म स्नेह इतना शक्तिशाली क्यों है ?**

➳_ ➳ परमात्म स्नेह ऐसा है

→ **जिसे कोई भी तोड़ नहीं सकता है**

→ **उसका कभी भी विनाश हो नहीं सकता है**

- क्युकी परमात्म स्नेह **अद्रश्य** है
- परमात्म स्नेह **अविनाशी** है
- परमात्म स्नेह **सदा सुख** देने वाले है
- इस स्नेह का आधार
  - **सर्व सम्बन्ध है**
- यह **SUPREME MAGNET** है
  - जो आत्माओ को खीच लेता है
- यही **1 सत्य सम्बन्ध** है
  - बाकि संसार के जो भी

- जितने भी सम्बन्ध है
- सारे जूठे है

- **जितने भी प्यार है**
  - वो सारे बंधन वाले है
  - कोई भी देहधारी का प्यार
  - हमे कभी भी **अविनाशी सुख दे ही नहीं सकता** है
  - कभी ना कभी तो **दुःख की प्राप्ति** होगी ही
  - क्युकी उसमे EXPECTATIONS होती है
  - **उसमे LOVE, CARE & ATTENSION चाहिये**
  - एक मात्र परमात्म स्नेह ही है
  - जो सदा ही सुख देने वाला है
- परमात्म स्नेह **शाश्वत / अविनाशी** है
- परमात्म स्नेह **पवित्र बनाने** वाला है
- परमात्म स्नेह आत्मा को **ऊँचा उठाने** वाला है
- परमात्म स्नेह में **कोई धोखा नई** है
- परमात्म स्नेह में कोई **COMPITITON नही** है
- परमात्म स्नेह **UNCONDITIONAL** है
  - परमात्म स्नेह में खोये रहना
  - **"एक बाप दूसरा न कोई"**
  - **यह नेचुरल प्यूरिटी की अवस्था है**
- परमात्म स्नेह **शक्तिशाली** है
  - क्युकी यहाँ सर्व प्राप्तिया एक से है
- परमात्म स्नेह **निस्वार्थ** है
  - संसार के सभी रिश्तो में स्वार्थ ही भरा हुआ होता है
- परमात्म स्नेह **UNLIMITED** है
  - इसमें कोई हदे नहीं है
- परमात्म स्नेह में **समानता** है
- परमात्म स्नेह सदा **24 घंटे साथ** ही रहता है
  - हम सदा उसकी ही COMPANY में रहते है
  - वो ही हमारा COMPANIYON भी है
  - वो युगल रूप में सदा हमारे साथ ही रहता है
- परमात्म स्नेह में कोई **भेदभाव नहीं** है
  - बाप ने सारे खजाने सबको 1 समान ही दिया हुआ है
- परमात्म स्नेह **कभी OUT OF RANGE** नहीं होता है
  - उसका नेटवर्क हमेशा ही रहता है

- ▶ उसे कभी भी फ़ोन लगाओ
- ▶ वो तुरंत उठा ही लेता है

➢➢ दु:ख

➳_ ➳ इस संसार में 2 प्रकार के दुखी लोग है

→ **एक तो वो, जिसे जो चाहिये, वो मिला नही**

→ **और दुसरे वो जिसे जो चाहिये था, वो मिल गया**

- ■ फिर भी वो पहले वाले से ज्यादा दुखी है
  - ▶ क्युकी वो मिलते ही, उन्हें कुछ और इरछा होती है
  - ▶ **की अभी कुछ और चाहिये**
  - ▶ और इस वजह से जो पहले मिल गया है, उसकी ख़ुशी ही गुम हो जाती है
- ■ संसार का यही नियम है
  - ▶ **पाओ तो भी दु:ख**
  - ▶ **न पाओ तो भी दु:ख**

→ इस संसार में वो है ही नहीं जो हमे चाहिये

- ■ **“तेरा तेरो ही पास है”**
  - ▶ **“अपने में ही उसे टटोलना है”**

→ संसार में जो भी प्राप्तिया / व्यक्ति / वस्तु है

- ■ वो सारे दुखदाई है
  - ▶ इसलिए **हमे 1 परमात्मा से ही स्नेह रखना चाहिये**

➢➢ परमात्म स्नेह टूटने के / कम होने के कारण कौन कौन से है ?

➳_ ➳ **संशय**

→ प्रेम में संशय आ जाता है की,

- ■ यह सब यज्ञ में हो क्या रहा है
  - ▶ यहाँ रहने वाले भी ऐसे करते है
  - ▶ ऐसे सब संकल्प आते है, तब स्नेह कम हो जाता है

➳_ ➳ जब दुसरो को देखने लगते है तब स्नेह कम हो जाता है

→ यह ऐसा क्यों ?

→ यह लोग ऐसा क्यों करते है ?

- ■ ऐसे संकल्पों में हम नॉलेजफुल आत्मा नहीं रह सकती है
- ■ **नॉलेजफुल आत्मा अर्थात सभी आत्माओ के संकल्प को जानकर उनके प्रति रहमदिल बनकर रहे**
  - ▶ रहम की दृष्टि ध्रुणा की द्रष्टि को समाप्त कर देती है

➳_ ➳ **अवज्ञा**

→ छोटी छोटी अवज्ञा करते रहने से

- परमात्मा स्नेह स्वतः ही खत्म हो जाता है

➳_ ➳ **आलस और अलबेलापन**

→ पता सब है, परंतु आलस बहुत है

- ज्ञान का चिंतन / मनन / चर्चा करने में आलस बहुत करते है
  - **THE MOST DIFFICULT THING IN THIS WORLD IS "THINK"**
  - **विचारसागर मंथन करना यह सबसे बड़ा काम है**
  - रोज हमे आपस में ज्ञान की रूह-रिहान करनी है
- ज्ञान के आलावा अगर और कोई दूसरी चर्चा करते हो
  - तो वो तुम्हे नर्क में ले जायेगी
  - ज्ञान के आलावा की सब चर्चा आसुरी चर्चा है

➳_ ➳ **उदासी**

→ जो प्राप्ति चाहिये, वह नहीं मिलती है, तो उदासी आ जाती है

- श्रेष्ठ पुरुषार्थियो को भी कई बार उदासी आ जाती है
  - क्युकी जितना पुरुषार्थ करना चाहिये उतना करते
  - जितना लक्ष्य रखा था, उतना हुआ नहीं
  - याद का चार्ट नहीं बढ़ रहा है
  - बुध्धि काम नही कर रही है
  - ज्ञान का चिंतन नहीं चलता
  - बहुत व्यर्थ संकल्प आते है
  - अभी भी अज्ञात से भय मन में छिपा हुआ है

➳_ ➳ **ATTACHMENT**

→ किसी और से ATTACHMENT उत्पन हो गई

- तो यह ATTACHMENT स्वतः कम हो जायेगी
  - इस मार्ग पर भगवान और संसार की आत्मा
  - दोनों को दिल में नहीं बिठा सकते हो
  - बाबा को दिल में बिठाने के लिये इस दिल मेसे सबको हटाना ही पड़ेगा
- बाबा कहते है, मैं बहुत इर्शालू हु
  - मेरे आलावा तुम्हे किसी को भी प्यार नहीं करना है

➳_ ➳ **व्यर्थ की बाते / नेगेटिव बाते**

→ सारा दिन भर व्यर्थ की बाते / नेगेटिव बाते अगर चलती रही

- तो प्यार स्वतः ही कम हो जायेगा

→ प्राप्तियो का चिंतन नहीं

→ कृतज्ञता / अहोभाव का भाव नहीं मन में

- ▶ तो प्यार स्वतः ही कम हो जायेगा

➳_ ➳ **बुध्धि का भटकना**

→ बुध्धि भटकती रहती है की,

- ■ यह जाऊ, वहा जाऊ
- ■ इसको देखू , उसको देखू
- ■ यहाँ क्या हो रहा है, वहा क्या हो रहा है
  - ▶ ऐसे व्यर्थ में बुद्धि को जब भटकाते है
  - ▶ तो प्यार स्वतः ही कम हो जायेगा

➳_ ➳ **सहयोग**

→ दुसरो से जब सहयोग नहीं मिलता है

- ■ धोखा मिलता है
  - ▶ तो प्यार स्वतः ही कम हो जायेगा

➳_ ➳ **2 नाव में पैर**

→ संसार भी चाहिये

- ■ और बाबा भी चाहिये
  - ▶ तो प्यार स्वतः ही कम हो जायेगा
  - ▶ दोनों हाथ में लड्डू किसी को भी नहीं मिल सकता है
  - ▶ फिर न यहां के रहते है, न वहा के
  - ▶ बिच में ही लटकते रहते है

➳_ ➳ **यह सारे कारण है, जिससे परमात्म स्नेह ख़त्म हो जाता है**